

12. दुर्गाष्टमी

-आचार्य जयराम शर्मा

भारतीय काल गणना के अनुसार विक्रमीय सम्वत्सरो में दो बार नवरात्रियाँ आती हैं। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नया विक्रम सम्वत् तथा वासन्तीय नवरात्र प्रारम्भ होते हैं। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक शारदीय नवरात्र होते हैं। दोनों ही नवरात्रों में शक्ति की प्रतीक जगज्जननी माँ दुर्गा की पूजा की जाती है। नवरात्रों का समय शुभ माना जाता है। मनुष्य पर प्रकृति की कृपा होती है। घरों में नवान्न (नया अन्न) आता है। ऋतु विज्ञान के तत्त्वज्ञ आचार्यों ने अग्नि और सोम को जीवन का मूल माना है। अग्नि का धर्म गर्मी तथा सोम का धर्म सर्दी है। वसन्तकालीन और शरदकालीन दोनों नवरात्रियाँ ऋतु परिवर्तन के आरम्भ काल में मनाई जाती है।

लक्ष्मी धन की तथा सरस्वती विद्या की देवी है, किन्तु दुर्गा माँ सभी प्रकार के ऐश्वर्य अपनी कृपा से मनुष्य को प्रदान करती है। दुर्गम नामक असुर का वध करने के कारण माँ जगदम्बा 'दुर्गा' के नाम से विख्यात है। 'दुर्गा सप्तशती' में माँ दुर्गा ने स्वयं कहा है-

तत्रैव वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।

दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मै नाम भविष्यति॥

अर्थात् पृथ्वी पर अवतरित होकर दुर्गम नामक असुर का वध करने से मेरा नाम 'दुर्गा' के नाम से प्रसिद्ध होगा। दुर्गा पूजा का यह महोत्सव अष्टमी तिथि को धूमधाम से मानाया जाता है। इसलिए यह उत्सव 'दुर्गाष्टमी' के नाम से प्रसिद्ध है।

आश्विन मास का शुक्ल पक्ष वर्षा ऋतु की समाप्ति व शरद् ऋतु के आगमन का समय है। इसी मास को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से दुर्गापूजा का उत्सव शुरू होता है। नौ दिन तक नव दुर्गाओं की पूजा निरन्तर चलती रहती है। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्ड, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री-ये देवी के नौ नाम हैं जिन्हें "नवदुर्गा" कहते हैं।

शक्ति की प्रतीक दुर्गा संसार के समस्त प्राणियों के अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करती है। सात-सौ श्लोकों के ग्रन्थ श्री दुर्गासप्तशती में अनेक नाम रूपों से माँ दुर्गा की स्तुति की गयी है। इस ग्रन्थ में तेरह अध्याय हैं जो तीन चरित्रों में विभक्त हैं। प्रथम चरित्र में भक्ति-मुक्ति प्रदायिनी देवी महाकाली के स्वरूप का वर्णन किया गया है। ब्रह्मा जी द्वारा स्तुति किए जाने पर महामाया स्वयं प्रकट हुई तथा देवी की प्रेरणा से भगवान् विष्णु ने मधु कैटभ नाम असुरों का वध किया। मध्यम चरित्र में महिषासुर मर्दिनी की उत्पत्ति की कथा वर्णित है। देवताओं के तेज से उत्पन्न सिंहवाहिनी भवानी दुर्गा ने महिषासुर नामक राक्षस का संहार किया। उनके इस कार्य से प्रसन्न होकर इन्द्रादि देवताओं ने माँ भगवती की मुक्त कण्ठ से स्तुति की। उत्तर चरित्र में द्यूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड रक्तबीज एवं शुम्भ-निशुम्भ आदि असुरों के वध की कथा है। इस

प्रकार माँ दुर्गा ने अनेक असुरों का संहार करके संसार में दैवी वृत्तियों की स्थापना की। दुर्गाष्टमी का यह पर्व अन्याय पर न्याय की, अधर्म पर धर्म की तथा असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है।

दुर्गाष्टमी का उत्सव समग्र भारत में श्रद्धा और भक्ति के साथ विभिन्न रीति-रिवाजों से मनाया जाता है। बंगाल की दुर्गापूजा तो सर्वप्रसिद्ध है। इस पर्व पर वहां घर-घर में दुर्गा मैया की मूर्तियां स्थापित करके विशेष विधान से दुर्गापूजन किया जाता है। कहते हैं कि स्वामी रामकृष्ण परमहंस की उपासना से प्रसन्न होकर मां भगवती ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिए थे।

हिमाचल प्रदेश शक्तिपीठ के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रदेश में दुर्गाष्टमी के त्यौहार पर विभिन्न प्रदेशों के श्रद्धालु नयना देवी, चिन्तपूर्णी, ज्वाला, जी बगलामुखी, कांगड़ा, चामुण्डा आदि देवी-मन्दिरों में भगवती के दर्शन करने के लिए आते हैं। वे देवी की पूजा-अर्चना, अराधना-उपासना करके मनौतियां मनाते हैं।

दुर्गाष्टमी के अवसर पर भौतिक व आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने की इच्छा से लोग उपवास रखते हैं। सात्विक आहार तथा उपवास से आत्मशुद्धि होती है। कुछ लोग दुर्गापूजा के दिनों में श्री दुर्गासप्तशती का पाठ भी करते हैं। अष्टमी के दिन लोग भजन कीर्तन करके देवी के दिव्य गुणों का स्मरण करते हैं। इस दिन कन्या-पूजन शुभ और पुण्य दायक माना जाता है।

जप-तप, पूजा-पाठ और हवन यज्ञ भारतीय जनमानस के धर्माचरण के अभिन्न अंग हैं। सच्चे मन से माँ दुर्गा की उपासना करने वाले मनुष्यों के हृदय में सत्य, प्रेम, अहिंसा और करुणा आदि भावों का प्रस्फुटन होता है। दुर्गा की आराधना से प्राणियों में नवशक्ति का संचार तथा पारस्परिक सद्भावना का सहज और स्वाभाविक उदय होता है। शक्ति की उपासना से साधक के मन में उदात्त भावना जागृत होती है। वह अपने पराए के संकीर्ण भावों से ऊपर उठकर प्राणी मात्र के कल्याणार्थ भगवती को प्रसन्न करने के लिए यों प्रार्थना करता है—

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य,
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य॥

अर्थात्—‘शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवी हम पर प्रसन्न होवे। सम्पूर्ण जगत् की माता। प्रसन्न हो जाओ। विश्वेश्वरि विश्व की रक्षा करो। देवी तुम ही चराचर जगत् की अधीश्वरी हो।’

* अभ्यास *

1. विक्रम सम्वत् कब से प्रारम्भ होता है ?
2. दुर्गा पूजा का उत्सव कब मनाया जाता है ?
3. दुर्गादेवी ने किन-किन असुरों का वध किया ?
4. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख देवियों के नाम बताओ।
5. पाठ में आए श्लोकों को कण्ठस्थ करो।